NCERT SOLUTIONS

CLASS - 7th



aglasem.com

Class : 7th

Subject : Social-Science-History

Chapter : 8

Chapter Name : ईश्वर के अनुराग

Q1 निम्नलिखित में मेल बैठाएँ :

बुद्ध नामघर

शंकरदेव विष्णु की पूजा

निज़ामुद्दीन औलिया सामाजिक अंतरों पर सवाल उठाए

नयनार सूफ़ी संत

अलवार शिव की पूजा

Answer.

बुद्ध	सामाजिक अंतरों पर सवाल उठाए
शंकरदेव	नामघर
निज़ामुद्दीन औलिया	सूफ़ी संत
नयनार	शिव की पूजा
अलवार	विष्णु की पूजा

Page : 120 , Block Name : फिर से याद करें

Q2 रिक्त स्थान की पूर्ति करें :

(क) शंकर _____ के समर्थक थे।

(ख) रामानुज _____ के द्वारा प्रभावित हुए थे।

(ग) _____ , _____ और _____ वीरशैव मत के समर्थक थे।

(घ) _____ महाराष्ट्र में भक्ति परंपरा का एक महत्वपूर्ण केंद्र था।

Answer.

(क) अद्वैत

(ख) अलवार

(ग) वसवन्ना , अल्लामा-प्रभु ज़ अक्कमहादेवी

(घ) पंढनपुर

Page : 120 , Block Name : फिर से याद करें

Q3 नाथपंथियों, सिद्धों और योगियों के विश्वासों और आचार-व्यवहारों का वर्णन करें।

Answer.

- इस समय ऐसे धर्म समूहों का विकास होने लगा था जिन्होंने साधारण तर्क वितर्कों का सहारा लेकर रूढ़ीवादी धर्म के कर्मकांडों और बनावटी मान्यताओं तथा समाज व्यवस्था की जमकर आलोचना की।
- उनमें नाथपंथी, सिद्ध, और योगी जन उल्लेखनीय है। इन्होंने संसार का परित्याग करने का समर्थन किया।
- इनके विचार से निराकार ब्रह्म का चिंतन मनन और उसके साथ एक हो जाने की अनुभूति ही मोक्ष का मार्ग थी।
- इसके लिए उन्होंने योगासन, प्राणायाम, और चिंतन मनन जैसी सूक्ष्म क्रियाओं के माध्यम से मन एवं शरीर को कठोर प्रशिक्षण देने की आवश्यकता पर जोर दिया।
- यह समूह विशेष रूप से नीची कही जाने वाली जातियों में बहुत लोकप्रिय हुई।
- उनके द्वारा की गई रूढ़ीवादी धर्म की आलोचनाओं ने भक्तिमार्गीय धर्म के लिए आधार तैयार किया, जो आगे चलकर संपूर्ण उत्तर भारत में लोकप्रिय हुआ।

Page : 120 , Block Name : फिर से याद करें

Q4 कबीर द्वारा अभिव्यक्त प्रमुख विचार क्या-क्या थे? उन्होंने इन विचारों को कैसे अभिव्यक्त किया?

Answer.

- कबीर संभवत: पंद्रहवीं-सोलहवीं सदी में हुए थे। वे अत्यधिक प्रभावशाली संत थे उनका लालन-पालन बनारस में या उसके आसपास के मुसलमान जुलाहा यानी बुनकर परिवार में हुआ था।
- हमें उनके विचारों की जानकारी उनकी साथियों और पदों के विशाल संग्रह से मिलती है। जिनके बारे में यह कहा जाता है कि इनकी रचना तो कबीर ने की थी यह घुमंतू भजन गायकों द्वारा गाए थे।
- कुछ भजन गुरु ग्रंथ साहब, पंच वाणी, और बीजक में संग्रहित एवं सुरक्षित हैं।
- उनके उपदेशों में ब्राह्मणवादी हिंदू धर्म और इस्लाम दोनों की बाह्य आडंबरपूर्ण पूजा के सभी रूपों का मजाक उड़ाया गया है।
- उनके काव्य की भाषा बोल चाल की हिंदी थी, जो आम आदमियों द्वारा आसानी से समझी जा सकती थी।
- उन्होंने कभी-कभी रहस्यमयी भाषा का भी प्रयोग किया, जिसे समझना कठिन होता है।
- उन्होंने निराकार परमेश्वर में विश्वास रखते थे।
- उन्होंने यह उपदेश दिया की भक्ति के माध्यम से ही मोक्ष यानी मुक्ति प्राप्त हो सकती है। हिंदू तथा मुसलमान दोनों लोग उनके अनुयायी हो गए।

Page : 120 , Block Name : फिर से याद करें

Q5 सूफियों के आचार-व्यवहार क्या थे?

Answer. संतो और सूफियों में बहुत अधिक समानता थी। यहां तक कि यह भी माना जाता है कि उन्होंने आपस में कई विचारों का आदान प्रदान किया और उन्हें अपनाया।

- सूफी मुसलमान रहस्यवादी थे।
- वे धर्म के बाहरी आडंबरों को अस्वीकार करते हुए ईश्वर के प्रति प्रेम और भक्ति तथा सभी मनुष्यों के प्रति दयाभाव रखने पर बल देते थे।
- इस्लाम ने एकेश्वरवाद यानी एक अल्लाह के प्रति पूर्ण समर्पण का दृढ़ता से प्रचार किया। सूफी लोगों ने मुस्लिम धार्मिक विद्वानों द्वारा निर्धारित विशद कर्मकांड और आचार संहिता को बहुत कुछ अस्वीकार कर दिया।

- इस्लाम में एकेश्वरवाद यानी एक अल्लाह के प्रति पूर्ण समर्पण का दृढ़ता से प्रचार किया इस्लाम धीरे-धीरे जटिल होता गया लेकिन सूफियों ने एक अलग रास्ता दिखाया जिसमें ईश्वर के प्रति व्यक्तिगत समर्पण पर बल दिया।
- वह ईश्वर के साथ ठीक उसी प्रकार जुड़े रहना चाहते थे, जैसे एक प्रेमी दुनिया की परवाह किए बिना अपनी प्रियतमा के साथ जुड़े रहना चाहता है।
- संत कवियों की तरह सूफी लोग भी अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए काव्य रचना किया करते थे।
- नाथपंथियों, सिद्धों और योगियों की तरह सूफी भी यही मानते थे कि दुनिया के प्रति अलग नजरिया अपनाने के लिए दिल को सिखाया पढ़ाया जा सकता है।

Page : 121 , Block Name : आइए समझें

Q6 आपके विचार से बहुत-से गुरुओं ने उस समय प्रचलित धार्मिक विश्वासों तथा प्रथाओं को अस्वीकार क्यों किया?

Answer. बहुत से गुरुओं ने उस समय प्रचलित धार्मिक विश्वासों तथा प्रथाओं को इसलिए अस्वीकार किया क्योंकि उनकी मान्यता में उन्ही ग्रंथो और विचारों की सत्ता ठीक थी। वह उन्हें ही संपूर्ण समाज कल्याण के लिए ठीक समझते थे। सदियों से उन्हीं मान्यताओं के द्वारा समाज को दिशानिर्देश देते आए थे। जो प्रथाएं विचार तत्कालीन समाज के कल्याण के लिए पर्याप्त नहीं थे और नए विचार के आगमन से उनकी सत्ता और उनके विचार दोनों ध्वस्त होते हुए नजर आ रहे थे, और जिसके विरोध में वे अपनी धार्मिक मान्यताओं और विचारों को श्रेष्ठ बता रहे थे।

Page : 121 , Block Name : आइए समझें

Q7 बाबा गुरु नानक की प्रमुख शिक्षाएँ क्या थीं?

Answer. 1539 में अपनी मृत्यु के पूर्व बाबा गुरु नानक ने एक अनुयाई को अपना उत्तराधिकारी चुना इनका नाम लहणा था जो बाद में गुरु अंगद के नाम से जाने गए। सोलवीं शताब्दी में बाबा गुरु नानक के उत्तराधिकारियों के नेतृत्व में उनके अनुयायियों की संख्या का विस्तार हुआ।

- यह अनुयायी कई जातियों के थे परंतु व्यापारी, कृषक, और शिल्पकार ज्यादा थे।
- इसकी वजह से यह हो सकती है कि बाबा गुरु नानक इस बात पर बल दिया करते थे कि उनके अनुयाई गृहस्थ हो और उपयोगी व उत्पादक पेशों से जुड़े हो।
- अनुयायियों से ये आशा भी की जाती थी कि नये समुदाय के सामान्य कोष में योगदान करें।

- 16वीं 17वीं शताब्दी यों की बदलती हुई परिस्थितियों ने सिख आंदोलन के विकास को प्रभावित किया शुरू से ही बाबा गुरु नानक के विचारों काशी का आंदोलन पर गहरा प्रभाव पड़ा उन्होंने एक ईश्वर की उपासना के महत्व पर जोर दिया।
- उन्होंने आग्रह किया कि जाति, धर्म, अथवा लिंग भेद, मुक्ति प्राप्ति के लिए कोई मायने नहीं रखते है। उसके लिए मुक्ति किसी निष्क्रिय आनंद की स्थिति नहीं थी।
- अपने उपदेशों के सार को व्यक्त करने के लिए उन्होंने 3 शब्दों का प्रयोग किया: नाम, दान और स्नान। नाम से तात्पर्य सही उपासना से था धान का तात्पर्य दूसरों का भला करना और स्नान का तात्पर्य आचार विचार की पवित्रता से था।
- उनके उपदेशों को नाम जपना, कीरत करना, और वंड छकना के रूप में याद किया जाता है। यह अवधारणा उचित विश्वास और उपासना ईमानदारी पूर्ण निर्वाह और संसाधनों को मिल बांटकर प्रयोग करना के महत्व के रेखांकित करती है। इस तरह बाबा गुरु नानक के समानता के विचारों के सामाजिक राजनीतिक मायने थे।

Page : 121 , Block Name : आइए समझें

Q8 जाती के प्रति वीरशैवों अथवा महाराष्ट्र के संतों का दृष्टिकोण कैसा था? चर्चा करें

Answer. विरशैवों ने सभी व्यक्तियों की समानता के पक्ष में और जाति तथा नारी के प्रति व्यवहार के बारे में ब्राह्मणवादी विचारधारा के विरुद्ध अपने प्रबल तर्क प्रस्तुत किए। इसके अलावा वे सभी प्रकार के कर्मकांड और मूर्ति पूजा के विरोधी थे।

13 से 17 वीं शताब्दी तक महाराष्ट्र में अनेकानेक संत कवि हुए, जिनके सरल मराठी भाषा में लिखें गए गीत आज भी मन को प्रेरित करते हैं। इन संत कवियों ने सभी प्रकार के कर्मकांडो, पवित्रता के ढोंगो, और जन्म पर आधारित सभी सामाजिक अंतरों का विरोध किया। यहां तक कि उन्होंने संन्यास के विचार को भी ठुकरा दिया और किसी भी अन्य व्यक्ति की तरह रोजी-रोटी कमाते हुए परिवार के साथ रहने और विनम्रता पूर्वक जरूरतमंद साथी व्यक्तियों की सेवा करते हुए जीवन बिताने को अधिक पसंद किया। उन्होंने इस बात पर बल दिया की असली भक्ति दूसरों के दुख को बांट लेना है। इससे एक नए मानवतावादी विचार का उद्भव हुआ।

Page : 121 , Block Name : आइए विचार करें

Q9 विचार से जनसाधारण ने मीरा की याद को क्यों सुरक्षित रखा?

Answer. बच्चे स्वयं करें।

Page : 121 , Block Name : आइए विचार करें

Q10 पता लगाएं कि क्या आपके आसपास भक्ति परंपरा के संतोष से जुड़ी हुई कोई दरगाह, गुरुद्वारा या मंदिर है। इनमें से किसी एक को देखने जाइए और बताइए कि वहां आपने क्या देखा और सुना।

Answer. बच्चे स्वयं करें।

Page : 121 , Block Name : आइए विचार करें

Q11 इस अध्याय में अनेक संत कवियों की रचनाओं के उद्धरण दिए गए हैं। उनकी कृतियों के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त करें और उनकी कविताओं को नोट करें, जो यहां नहीं दी गई है। पता लगाएं कि क्या यह गाई जाती हैं। हां, तो कैसे गाई जाती हैं और कवियों ने इन में किन विषयों पर लिखा था।

Answer. बच्चे स्वयं करें।

Page : 121 , Block Name : आइए विचार करें

Q12 इस अध्याय में अनेक संत कवियों के नामों का उल्लेख किया गया है। परंतु कुछ की रचनाओं को इस अध्याय में शामिल नहीं किया गया है। उस्मा मैं कुछ और जानकारी प्राप्त करें, जिसमें ऐसे कवियों ने अपनी कृतियों की रचना की। क्या उनकी रचनाएं गाई जाती थी? उनकी रचनाओं का विषय क्या था?

Answer. बच्चे स्वयं करें।

Page : 121 , Block Name : आइए विचार करें